स्वतंत्रता सेनानी चौधरी बलाराम आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट चान्दगोठी के संस्थापक व निदेशक की कलम से.....

आज से बीकानेर रियासत के पिछडे ग्रामीण क्षेत्र चान्दगोठी जिला चूरू में बैठकर जब स्वतंत्रता सेनानी चौधरी बलाराम आर्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय की विवरणिका में दो शब्द लिखने हेतु अपनी लेखनी हाथ में ले रहा हूँ तो मुझे 26 जून 1984 का वह दिन आर्य समाज के महान तपस्वी सन्यासी व युवकों के ह्रदय सम्राट स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व सांसद) ने राजगढ के सार्वजनिक विश्राम गृह में मुझे वकालत न करने व शिक्षा जगत के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा दी, और कठोर शब्दों में कहा कि "यदि समाज में अपनी पहचान बनानी है व राष्ट्र निर्माण में भूमिका निभानी है तो आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में समाज का उद्धार हो, ऐसा कार्य करें" आदरणीय स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से मैंने वकालत के पेशे को छोडकर ग्रम चान्दगोठी में 09 फरवरी 1986 को एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की । मुझे मेरे शुभचिन्तक शिक्षाविद्धों ने सलाह दी कि यदि आप शिक्षा जगत के क्षेत्र में कार्य करना चाहते है तो किसी शहरी क्षेत्र को चुने जहां धन और वैभव सरलता से प्राप्त हो जाये । ग्रामीण क्षेत्र शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु अनुकुल नही होता है, क्योंकि अशिक्षित समाज में ईर्ष्या व दुर्भावना का अधिक समावेश होता है, यह लोग सही व गलत कार्यो का मूल्यांकन करने में सक्षम नहीं होते है जिस कारण अधिकांश समय अनावश्यक संघर्ष करने में व्यतीत हो जाता है व धन का भी अपव्यय होता है । इस कारण ग्रामीण क्षेत्र में सफलता मिलना असंभव है लेकिन धन व वैभव का लालच मुझे आकर्षित नहीं कर सका और मैंने किसी की सलाह की परवाह न कर इस ग्रामीण क्षेत्र को कार्य क्षेत्र चुना ।

ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक हित का कार्य करना कितना मुश्किल होता है, इसका अनुभव मुझे तब हुआ जब मैंने इस क्षेत्र में कदम रखा । और मुझे यह भी अनुभव हुआ कि जिस समाज का हम उत्थान करना चाहते है वहीं समाज ईर्ष्या व दुर्भावना से ग्रस्त होकर अनेक प्रकार के अवरौध पैदा करता है जिसका कुप्रभाव समाज पर तो पडता ही है साथ ही समाज का हित चाहने वाला भी हतोत्साहित हो जाता है । मुझे भी इन कठीन परिस्थितियों से जुझना पडा । परन्तु मैंने विषम परिस्थितियों में भी अपना मनोबल नहीं खोया बल्कि पूर्ण उत्साह, निष्ठा व लगन से अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहा । महर्षि दयानन्द का यह कथन मुझे बार–बार प्रेरणा देता रहा **"क्या किया जाये, जिसका हम उपकार करते है, वे ही उल्टा विरोध करते है, यदि दुष्ट दुष्टता को नहीं छोडता तो श्रेष्ठ श्रेष्ठता को क्यों छोडे"**

पिछले कुछ वर्षो में हमने विकास कार्यक्रमों को एक नई कांति प्रदान की है । और हमारे प्रयासों से महाविद्यालय प्रतिफलित हुआ है । इस उच्च शिक्षा जगत में राजस्थान में शीर्षस्थ होने के लिए नये पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

मैं पूर्ण विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मेरा जीवन इस संस्था को समर्पित रहेगा । स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा, आर्य समाज की शिक्षा एवं स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने

वाले परिवार की पृष्ठभूमि मेरी निधि है जिसको मैं जीवन में कभी भी कलंकित नहीं होने दुंगा ।

मैं ट्रस्ट की तरफ से आपसे विनम्र आग्रह करता हूँ कि आप पूर्व की भांति इस संस्था पर अपना स्नेह बनाये रखेंगे तथा शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढने में हमारा व हमारे कर्मचारियों का मार्गदर्शन करते रहें ताकि शिक्षा के उच्च मानदण्डों को प्राप्त कर सकें ।

शुभकामनाओं के साथ.....

हवासिंह आर्य
अध्यक्ष
स्वतंत्रता सेनानी चौधरी बलाराम आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट
चान्दगोठी, जिला चूरू (राज.)